सबसे खतरनाक रोगाणु

पिछले वर्ष एबोला वायरस का काफी शोरगुल रहा था। कारण स्पष्ट हैं - एबोला वायरस का संक्रमण जानलेवा होता है, यह तेज़ी से फैलता है और इसका कोई इलाज नहीं है। एबोला की महामारी ने कई अफ्रीकी देशों में संकट के हालात पैदा कर दिए थे। मगर एक अच्छी बात यह रही कि वैज्ञानिक जल्दी ही नई दवाइयों और टीके का परीक्षण कर सके। अब विश्व स्वास्थ्य संगठन ने रोगों की एक सूची जारी की है जो एबोला के समान खतरा उत्पन्न करने की क्षमता रखते हैं। सूची जारी करने का उद्देश्य यह है कि महामारी से पहले ही शोध कार्य शुरू हो सके।

खतरनाक रोगाणुओं की यह सूची विश्व स्वास्थ्य संगठन के एक व्यापक कार्यक्रम 'महामारियों की रोकथाम हेतु अनुसंधान व विकास का नक्शा' का हिस्सा है। एबोला के हमले के बाद संगठन की इस बात के लिए काफी आलोचना हुई थी कि उसने प्रतिक्रिया देने में बहुत देर लगाई थी। लिहाज़ा, विश्व स्वास्थ्य सभा ने संगठन को निर्देश दिया कि वह बड़ी महामारियों से निपटने की कोई बेहतर रणनीति विकसित करे और गंभीर संक्रामक रोगों के संदर्भ में अनुसंधान व विकास कार्य को गति देने का प्रयास करे। दिक्कत यह है कि अक्सर इन बीमारियों के उपचारों का अध्ययन करने का अवसर तभी मिलता है जब महामारी शुरू हो जाती है। इसलिए ज़रूरी है कि ऐसे उपचार हमारे पास पहले से मौजूद हों ताकि महामारी शुरू होते ही इनका परीक्षण किया जा सके।

लगभग दो दर्जन वैज्ञानिकों ने जेनेवा में बैठकर यह कोशिश की कि ऐसी 5-10 बीमारियों की सूची तैयार की जाए जो निकट भविष्य में गंभीर रूप ले सकती हैं और जिनके लिए फिलहाल कोई चिकित्सकीय हस्तक्षेप उपलब्ध नहीं हैं। उन्होंने आठ रोगों की सूची तैयार की हैः एबोला, मारबर्ग, सार्स (गंभीर सांस सम्बंधी तकलीफ), निपा, लासा बुखार, रिफ्ट वैली बुखार और क्रीमियन कॉन्गो खूनी बुखार।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की विज्ञान नीति सलाहकार कैथी रॉथ ने बताया है कि ये वे बीमारियां हैं जिनके लिए न तो पर्याप्त धन उपलब्ध है और न ही इन पर समुचित ध्यान दिया गया है।

अलबत्ता, ऐसी सूची बनाना कोई आसान काम नहीं था। काफी बहस हुई और कुछ सहमति बनी। जैसे एचआईवी जैसी बीमारी को इस सूची में से छोड़ दिया गया क्योंकि इसके लिए पहले से ही काफी धन उपलब्ध हो रहा है और अनुसंधान भी ज़ोर-शोर से जारी है। यही स्थिति पक्षीवाहित फ्लू की भी है।

अब अगला कदम यह होगा कि उक्त आठ बीमारियों के बारे में अध्ययन करके पता किया जाए कि इनके संदर्भ में अनुसंधान की क्या स्थिति है। उसके बाद इनकी संभावित दवा, रोकथाम के उपायों वगैरह पर बातचीत होगी और कार्रवाई की रणनीति बनाई जाएगी। विचार यह है कि जनस्वास्थ्य की उन समस्याओं पर ध्यान केंद्रित किया जाए जो वर्तमान में समाज को प्रभावित करती हैं और साथ ही उन समस्याओं पर भी नज़र रखी जाए जो भविष्य में सिर उठा सकती हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***